रविवार, दिनाँक **11-08-2024** को सत्संग में हुए वचनों का संक्षिप्त विवरण

साजन आओ मेरे

दर्श दिखाओ साजन मेरे

साजन आओ मेरे

तूने यह ब्रह्माण्ड बनाया

उसमें मुझ को भी उपजाया

निमित्त कारण इंसान बनाया

उसका मुझको ज्ञान कराओ।

जो तुझमें हैं वह गुण मैं धारुँ

तेरी वाणी सदा चितारुँ

सब में तुझको ही निहारूँ

सो विध मोहे बताओ

ख्याल सदा अपने घर में ठहरे

तेरी माया न उसे सतावे

अफुर अवस्था में सदा ही राहवे

ऐसी युक्ति बताओ

रूप का मुझको मोह नहीं है

रंग की मुझको चाह नहीं है

अब रेखा भी मेरी मिटाओ

आओ एक हो जाओ

साजन आओ मेरे

दर्श दिखाओ साजन मेरे

साजन आओ मेरे

सजनों यह सबसे उत्तम इच्छा है पर हमें जानना तथा मानना है कि इस इच्छा की पूर्ति हेतु कुदरत ने हमें पहले से ही सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के रूप में परिपूर्ण ज्ञान व विधि बख़्शी हुई है। अतः यकीन मानो कि अगर तो हम इस ज्ञान को आत्मसात् कर लेते हैं और बताई विधि अनुसार अपने ख़्याल-ध्यान को आत्मस्वरूप में स्थित रखने के स्वभाव में ढल जाते हैं तो हमारी इच्छा स्वतः ही पूर्ण हो जायेगी। निःसंदेह इस इच्छा पूर्ति हेतु समर्पण के भाव की अति आवश्यकता है। सजनों यह किसी व्यक्ति विशेष के आगे नहीं अपितु जो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ में विदित सद्ज्ञान है, उसके प्रति समर्पण की बात हो रही है। अतः हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ क्योंकि पुरुषार्थ और आत्म-नियन्त्रण के बगैर सफलता कभी प्राप्त नहीं हो सकती। इसीलिये कहते हैं कि आगे बढ़ो, बढ़ते जाओ और कभी भी पीछे मुड़कर मत देखो कि संसार में क्या हो रहा है। समझो कि जो भी हो रहा है वो तो हो ही रहा है और उस होनी का निवारण आपके हाथ में नहीं है। यह तो सारा उस कुदरत का खेल है, अतः कुदरत के ही हाथ में है और कुदरत अपना कार्य नियमानुसार समयबद्ध तरीके से कर लेती है। यही चलन हमने भी सीखना है यानि अपनी इस सर्वोत्तम इच्छापूर्ति हेतु समर्पित हो जाना है। यही नहीं हमारा ख़्याल मन मन्दिर में शोभित आत्मा रूपी परमात्मा के साथ हर क्षण जुड़ा रहे और अपनी यथार्थता को ज्ञान-स्वरुप में धारण कर यथा आचार-व्यवहार में ले आये। ऐसा करने से जीवन स्वतः ही निर्विकारी हो जायेगा और परमात्मा की खोज समाप्त हो जायेगी क्योंकि हृदयगत सत्य प्रकाशित हो आपको आनन्दमय अवस्था में स्थित कर देगा। इसलिए बारम्बार कह रहे हैं, हिम्मत दिखाओ, हिम्मत दिखाओ। अब ध्यानपूर्वक भजन सुनोः-

महाबीर जी रहे ने पुकार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।

मिथ्या ए संसार, 'प्रीति' तूं किस नाल करनैं।।

ए देही तेरी ख़ाक दी ढेरी, निकल गया चमत्कार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिस देही दा अभिमान तूं करनैं, ओ वी ना चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

पंज चोर तेरे अन्दर वसदे, मौत दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।।

जिस धन दा हंकार कितोई, ओ यमां दा घर रहे दिखाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या महल ते मिथ्या माड़ियां, चार दिनां दी बहार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

जिन्हां पिच्छे तूं कूड़ कमत्तो, ओही आसन तैनूं साड़।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

भाई बन्धु तेरे मित्र प्यारे, कोई न चलसी तेरे नाल।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

हुण वी सम्भल तूं मूर्ख बन्दिया, जन्म अपना संवार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

मिथ्या संसार दी प्रीति नूं छोड़ के, आओ महाबीर जी दे द्वार।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

नाम ध्यावो भैणां उस बली दा, यमां तो लैसन छुड़ा।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

महाबीर जी दे चरणां विच 'प्रीति' बढ़ाओ, रघुनाथ जी नूं देसन मिला।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।।

दासी ऐही अरज़ां करदी, सुध लवो भैणां सच्चे घर दी।

महाबीर जी अगूं करो नमस्कार, महाबीर जी अगूं करो नमस्कार।।

'प्रीति' तूं किस नाल करनैं, मिथ्या ए संसार।

इस भजन द्वारा सच्चेपातशाह जी सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड के हर मानव को सम्बोधित करते हुए, चेतावनी स्वरूप में जीवन की गहराई और भटकाव का स्पष्टतया वर्णन करते हुए, संसार की मिथ्यता का भान कराते हैं। इसके साथ ही वह मिथ्यता से उबर सार्थक जीवन जीने के प्रति उत्साहित करते हुए कहते हैं कि हे कलुकाल के भाव-स्वभावों में ग्रस्त मानव ! अपना सत्य जान कि यह देह जो तुझे प्राप्त हुई है, खाक की ढेरी के सिवाय और कुछ भी नहीं है। इस मिथ्या देह पर मत इतरा, यह नाशवान है यानि बनी है तो अवश्य मिटेगी ही मिटेगी। जब मिटेगी तो दुःख भी प्रदान करेगी। अतः सद्ज्ञान प्राप्त करने हेतु सजन श्री शहनशाह हनुमान जी के वचनों का दृढ़ता से अनुकरण करना आरम्भ कर दे। ऐसा करने पर हृदय में स्वतः ही सत्य प्रकाशित होने लगेगा और ख़्याल-ध्यान मिथ्यता से हटकर, सदा नित्य अवस्था में समरस स्थिर बना रहेगा।

फिर वह आगे स्पष्ट करते हैं कि यह जो तेरे प्यारे भाई-बन्धु हैं, ये सब भी मतलब के सम्बन्ध हैं। यह सब अपनी मनमत पर चलने वाले हैं क्योंकि उनकी पालना करने वालों ने इनको मिथ्या ज्ञान प्रदान कर मिथ्यता का प्रतीक बना दिया है। इस प्रकार अमरता के प्रति सर्वदा अनिभिज्ञ रहने के कारण इन्हें मिथ्यात्व से ही प्यार हो गया है। अब जब इन्हें यह ज्ञान ही नहीं कि इनकी वास्तविक यथार्थता क्या है, इनको यह अमोलक मानव चोला क्योंकर प्राप्त हुआ है तथा इस चोले द्वारा किस कारज की सिद्धि को प्राथमिकता देनी चहिये, तो कैसे यह अजरता अमरता के भाव में बने रह सकते हैं?

इस सन्दर्भ में सजनों ज्ञात होता है कि कैसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव का मन-मस्तिष्क मिथ्यता के संग जुड़ता चलता गया और लगातार बढ़ते इस जुड़ाव के कारण त्रेता से द्वापर और द्वापर से कलियुग आ गया। इस क्रम में इन मिथ्याचारियों ने बेहिसाब कितने ही कष्ट भोगे और परिणामस्वरूप कोई छोटा तो कोई बड़ा, कोई राजा तो कोई रंक और कोई प्रजा बन गयी। इस भिन्न भेद के कारण कई फसाद खड़े हो गये और इन फसादों ने मानव जाति में तेरी-मेरी का भाव इस प्रकार भर दिया कि व्यक्तिगत तौर पर सब जाति-पाति में बँट गए और अनेकानेक धर्म व पंथ बन गये। इस तरह संसार की व्यवस्था कठिन से कठिन होती चली गई। सजनों अब जबकि सब कुछ अति की ओर बढ़ गया तो कुदरत के वाली श्री

साजन जी ने मानव जाति के उत्थान के निमित्त सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ प्रदान किया। समय अनुसार इस ग्रन्थ का सजनों एक-एक शब्द धारणीय है। इस धारणा से अन्तर्घट में छाया अज्ञान अंधकार छँटने लगता है और इंसान इस सद्ज्ञान को व्यवहार में लाकर, शुभ कर्म करने के स्वभाव में ढलता जाता है और मानवता का प्रतीक बन जाता है। इस भजन में उन्होंने स्पष्टतया बता दिया है कि जिस संसारी धन से आप प्यार करते हो वह सब साथ नहीं चलने वाला। जिस शरीर का सौन्दर्य देखकर हर्षित हो उठते हो यानि स्वाभिमान में आ जाते हो कि मैं अति सुन्दर हूँ, वह भी साथ नहीं चलने वाला। इसी तरह इस शरीर के साथ जुड़े रिश्ते नाते, जिन्हें अपना समझते हो वे भी संग नहीं रहने वाले अपितु वे सब नातेदार ही अन्त समय में आपको जलाने व साड़ने आएंगे।

इसी के साथ सजनों सच्चेपातशाह जी यह भी कहते हैं कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार बहुत बड़े दुश्मन हैं। अतः इन पाँच चोरों को अपने मन में मत बसाओ। इन पाँच चोरों को मन से निष्कासित करने की विधि हमें सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने प्रदान की हुई है जिसके अनुसार हर क्षण हमें अपना ख़्याल-ध्यान प्रभु चरणों में तल्लीन रखना है और उन्हीं के शास्त्रविहित वचनों को अपने जीवन का सार गर्भित ज्ञान मानकर उनकी पालना करनी है। अतः सजनों किसी का अनुसरण करते हुए अपने यथार्थ मार्ग से मत भटको अपितु सुदृढ़ता से सद्मार्ग पर अटल बने रहने के लिये सीस झुकाकर परोपकार प्रवृत्ति में ढल जाओ। परोपकार प्रवृत्ति में ढलना अहंकार को समाप्त करने का एकमात्र सुलभ साधन है क्योंकि अहंकार के समाप्त होने पर काम, क्रोध, लोभ, मोह अपने आप चले जाते हैं और आप इनकी गिरफ्त से आज़ाद हो जाते हो। इससे सजनों स्पष्ट होता है कि स्वतन्त्रतापूर्वक जीवन जीने की कला, सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों के साथ जुड़ने से आप आराम से प्राप्त कर सकते हो। इसीलिए तो सजनों आध्यात्मिक क्रान्ति का शुभारम्भ हुआ है ताकि आप स्वतन्त्रतापूर्वक अमरता के प्रतीक बन निर्भय होकर जीवन जीने में सफल हो जाओ और निर्विकारी नाम कहा सको। सजनों जानो कि यहाँ आकर परमात्मा की खोज भी समाप्त हो जाती है क्योंकि वह तो सर्व-व्यापक है, इसमें, उसमें और मुझमें भी है तो मैं उसे इधर-उधर क्यों ढूँढता हूँ? मैं इस सत्य को क्यों नहीं मानता कि वह सर्व-व्यापक सब में है और सबके साथ सद्-व्यवहार करना, अपना आदर आप करने के समान है। इस संदर्भ में सजनों यदि मैं स्वयं ही अपना आदर करने का तरीका नहीं जानता तो दूसरा कौन मेरा आदर कर सकता है? आदर का प्रत्युत्तर आदर ही होता है। सजनों यह पाँच विकार ही समस्त नकारात्मक भावों की जड़ यानि मूल हैं, अतः इस जड़ को

समाप्त कर देने में ही समझदारी है। याद रखो जो ऐसा करने में सक्षम हो जाता है वही ब्रह्म-ऋषि कहलाता है और ब्रह्ममय हो जाता है अतः खुद को समझाओ। इसके लिये सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ की वाणी का अध्ययन, चिन्तन व मनन करके इन्सानियत में आ जाओ।

इस परिप्रेक्ष्य में जानो कि इसी कारण कुदरत के आवाहन अनुसार ध्यान-कक्ष का निर्माण करा गया है ताकि आप अभी जो जीवन बनाने का कार्य अपने आप नहीं कर पा रहे वह इस कुदरती व्यवस्था द्वारा कर लो और सद्गति प्राप्त कर लो। अतः आपको ध्यान-कक्ष की हर क्लास में सबसे पहले जाकर बैठना चाहिये। ध्यान-कक्ष की क्लास को छोड़कर कदापि मत भागना क्योंकि यह परमात्मा से दूर भागने की बात होगी। आप तो पहले ही उनसे दूर हो और अधिक दूर क्यों भाग रहे हो। अब कुदरत ने तो सजनों व्यवस्था कायम की हुई है, यदि उस कुदरत की ही इज़्जत नहीं करोगे तो कुदरत का वाली कैसे प्रसन्न होगा? अतः उनका यह सन्देश जन-जन तक प्रसारित करो। मानव के सुधार हेतु यह एक गहरा और कड़वा सत्य है। इस संदर्भ में घबराओ मत बल्कि प्रसन्न हो जाओ क्योंकि आज प्रसन्नता का दिवस है। आज हमें अपनी कमज़ोरियों की समझ आ रही है और हमें आध्यात्मिक क्रान्ति की सफलता हेतु स्वाभाविक बदलाव लाने हेतु प्रोत्साहित किया जा रहा है। अतः आज के शुभ दिन को अपने व सबके लिये शुभ ही रखना। अब आगे कीर्तन सुनोः-

श्री रघुनाथ जी अपने सुपुत्र श्री महाबीर जी को कह रहे हैं

(सजन दयालु श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।

कोई विरला ओ बच जासी, जेहड़ा राम शरण जो आसी।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

महाबीर जी अपना बल प्रगट करो, भारत माता जी दे सिर तों भार हरो।

माता जी दे कष्ट निवारण करो, नाम तुहाडा तेजधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

राम नाम नूं हुन याद करो, जन्म अपने नूं आबाद करो।

सतवस्तु दा सजनों राज करो, ओ सबदा शहनशाली है।।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

अत्यन्त नाम वल ध्यान धरो, जन्म अपना हुन आज़ाद करो।

सतवस्तु दा सजनों साज करो, ओहदी ताकत अजब निराली है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दी आज्ञा दा पालन करो, संकट टारी माता दा संकट दूर करो।

माता मारे आवाज़ां, ऊंदी विपता हरो, नाम आपदा हनुमान जी बलधारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

भारत माता जी दे वचनां नूं पूरा करो, हो सपुत्र उस दी पीड़ा नूं दूर करो।

हटे अन्धेरा हुन चानणा ज़रूर करो, नाम आपदा न्यायकारी है।

ओ३म् भारत माता जी दा इन्साफ़ करो नाम आपदा शहनशाली है।

ए दुनियां मुकने वाली है, ए मुश्किल बचने वाली है।।

सजनों इस कीर्तन द्वारा कुदरत कुल ब्रह्माण्ड को आगाह कर रही है कि सावधान हो जाओ और समझदार बन जाओ। आशय यह है कि अपने बचाव हेतु कुदरती वाणी का आदर करना आरम्भ कर दो और कुदरत के नीति-नियमों अनुसार यथा जीवन व्यवहार करना सुनिश्चित कर दो। इसी के साथ ही कुदरत चेतावनी भी दे रही है कि यह दुनियाँ समाप्त होने वाली है। कोई विरला वही निष्कामी यार बचेगा जिसको सतवस्तु में स्थान प्राप्त होगा। जानो सजनों जिसको सतवस्तु प्राप्त हो जाती है यानि सत्य जो कि परमात्मा है उसकी प्राप्ति हो जाती है वह आत्मतुष्ट व सन्तोषी हो जाता है। सन्तोषी ही धीर होता है, सन्तोषी के मन में संकल्प व इच्छाएँ पैदा नहीं होती क्योंकि उसके अन्दर सब कुछ होने का भाव मजबूत होता है। संकल्प रहित अवस्था धीरता की निशानी है। जो धीर होता है वह वीर होता है और वीर ही सत्य-धर्म के निष्काम रास्ते पर आजीवन निरन्तर बने रहते हुए जो भी करता है, सुकर्म ही करता है। यही नहीं वह कुकर्म-अधर्म करते हुए कर्मफल में नहीं जकड़ता अपितु सदा आज़ाद रहता है। इस विषय में सजनों आप हैरान-परेशान मत होवो अपितु अपने मस्तक की ताकी खोल लो और आत्मज्ञानी बन जाओ। आत्मज्ञानी बनते ही जान जाओगे कि 'मैं अमर आत्मा हूँ, शरीर नहीं हूँ'। मुझे अपने दिव्य गुणों अनुसार ही इस जगत में निर्लिप्तता से विचरना है, इसके लिये चाहे कुछ भी हो जाये। इस मिथ्या जगत को त्याग इलाही श्रृँगार धारण करना है।

सजनों जानो कि अभी जो मिथ्यापूर्ण भाव-स्वभाव आपने धार रखे हैं, वह दागदार हैं और ख़्याल को नीचे की ओर गिराने वाले हैं। जब ख़्याल नीचे गिर जाता है और मनुराज में चला जाता है तो अक्षर भी नहीं चल सकता, इन्सान में हिम्मत ही नहीं रहती। इसीलिये अक्षर चलाने की विधि सजन श्री शहनशाह हनुमान जी ने प्रदान की हुई है। इस युक्ति-अनुसार ज्यों-ज्यों अक्षर चलता है, त्यों-त्यों ख़्याल ऊपर उठता जाता है और उठते-उठते ज्ञानेन्द्रियों का टप्पा मारकर अपने घर में स्थित हो जाता है। तदुपरान्त आत्म-दर्शन हो जाता है। सजनों जानो कि यह कोई नामुमकिन बात नहीं है अपितु इस हेतु क्रान्तिकारी स्तर पर स्वयं में मानवता अनुकूल परिवर्तन लाने का साहस दिखाना है और सर्वहित के निमित्त निष्काम भाव से परोपकारी जीवन जीना आरम्भ कर देना है। सजनों जानो कि जब तक इस काम को नामुमकिन समझते रहोगे तब तक हिम्मत नहीं जुटा पाओगे। अतः नामुमकिन को सजन श्री शहनशाह हनुमान जी की युक्ति द्वारा मुमकिन कर दिखलाओ कैसे? - वचनों की पालना करके, दुनियाँ सँग नाता तोड़, उस एक सँग नाता जोड़ कर। अभी आपने सुना कि भारतमाता हमें पुकार रही है, पूरा ब्रह्माण्ड भी पुकार रहा है। तो

आपको इससे समझ आ जानी चाहिये कि उनके सिवाय हमारा रक्षक कोई भी नहीं है, सो उनके अधीन हो जाओ। अब आगे सुनोः-

(श्री रामचन्द्र जी के मुख के शब्द)

उठो हनुमान जी तेज अपना दिखा लौ, अपना दिखा लौ।

भारत माता पई ए रोंदी उसनू हर्षा लौ, उसनू हर्षा लौ।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

प्रीति हनुमान जी नाल कोई विरला पिया लांवदा ओ विरला पिया लांवदा।

ओदी रमज़ कोई विरला पिया पछानदा, कोई विरला पिया पछानदा।।

ओहदे नाल तुआडा है बचा कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

वक्त है अखीरी छडो कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ, कलुकाल दियाँ कुरीतियाँ।

मनुं हटा दियो कलुकाल दीयाँ यादगीरियां, कलुकाल दीयाँ यादगीरियां।।

घड़ा तुआडा ए होना है ठा, कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

भारत माता देखो कैसे संकट विच आई है संकट विच आई है।

कुकर्मां ते अधर्मां ओहदी होश भुलाई है, होश भुलाई है।।

उठो महाबीर संकट माता दे दियो मिटा, कोई विरला बच जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

ओ इन्सानों कलुकाल ने खून पीता है बहुतेरा जी, ओ पीता है बहुतेरा जी।

अपनी इन्सान बाज़ी जितने दा वेला जी, ओ जितने दा वेला जी।।

हनुमाज जी दे वचनां ते जा, नहीं ते फेर पछताऊगा, फेर पछताऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

आत्म पद् दियां तारियां कोई विरला पिया लांवदा, कोई विरला पिया लांवदा।

जन्म ते मरण कोई विरला पिया मिटांवदा, कोई विरला पिया मिटांवदा।।

परम् पद दी होई ए जिन्हुं चाह, जग प्रकाश हो जाऊगा।

ओ इन्सान उस प्रीतम नाल प्रीत बढ़ा कोई विरला बच जाऊगा।

हुन तूं अपना बल दिखा कोई विरला बच जाऊगा।।

दोहाः- दरबार दे अन्दर हो रिहा कलुकाल दा प्रचार।

बालक गोदी विच पायके श्री राम जी कर रहे प्यार।।

सियापति रामचन्द्र जी की जय पवनसुत हनुमान जी की जय।

उमापति महादेव जी की जय।।

कुदरत का यह सन्देश सुनकर बहुत अच्छा लगा है। इस संदर्भ में सजनों जब कुदरत हमें पहले ही आगाह कर रही है तो हमें अपने प्रति सजनता दिखानी तो बनती ही है। आप सब

अपना बचाव कर सको उसी के लिये कुदरत के आदेशानुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रम हो रहे हैं। ध्यान-कक्ष की क्लास भी उसी के अन्तर्गत आती है। इस क्लास में अगर आप वहाँ आना और बात को समझना छोड़ देते हो तो आप खुद ही अपने जन्म के वैरी हो। जो कोई भी ऐसा करता है वह अपने साथ निश्चित रूप से वैर कमाता है। इस सन्दर्भ में जानो कि अपने प्रति सजनता तो यह है कि जहाँ से मुझे सत्यज्ञान प्राप्त हो रहा हो, वहीं पर मैं अपने जीवन का समय लगाने को प्राथमिकता दूँ। आपको यह बार-बार समझाया जा रहा है पर आपके अन्तर्घट में कलुकाल इतना छा चुका है कि आपका उसने होशहवास ही उड़ा दिया है। आप होश में ही नहीं आ रहे हो और यदि होश में नहीं आओगे तो सतवस्तु के कुदरती ग्रन्थ के वचनों को किस प्रकार समझोगे और समझदारी से उन्हें जीवन व्यवहार में उतारकर सजनता के प्रतीक कैसे बनोगे? यह तो फिर नामुमकिन होगा पर अगर तनिक सी भी आपमें बुद्धिमत्ता है तो अपने साथ धोखा मत करो। अपना समय ध्यान-कक्ष में लगाने के स्थान पर और कहीं लगाना जगत में समय व्यर्थ करने की बात है, तो जानो आप विरुद्ध चल रहे हो। जो उनके वचनों के विरुद्ध चलता है वह अपनी दुर्गति का अनुमान लगा सकता है। अगर इतना सुनने के बाद भी आपने वहाँ समय लगाना उचित नहीं समझा तो आपका कुछ नहीं बन सकता। आपका तो यह कर्त्तव्य बनता है कि अपनों के साथ-साथ औरों को भी उत्साहित करके अपने संग ले लो। उनका भी मुँह जगत की तरफ से मोड़ो और अपने माता-पिता होने का फ़र्ज-अदा सतर्कता से करना आरम्भ कर दो। अब हमें बताओ कि इस सप्ताह में कौन सा कार्यक्रम होने वाला है?

'आध्यात्मिक क्रान्ति के तहत् सजन भाव अपनाने हेतु समभाव-समदृष्टि की युक्ति अपनाओ, जगत से आजाद हो जाओ'।

यह कार्यक्रम कब होना है?

'15 अगस्त को'।

सजनों आपने इस दिन अपने साथ अपने अन्य संगी-साथियों को भी अवश्य लाना है और पौने दस बजे तक अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेना है। समभाव-समदृष्टि के कीर्तनों को पूरी तरह से पढ़कर आना है ताकि मानसिक रूप से आप तैयार होकर आओ। जो भी वहाँ बताया जाये उसको ग्रहण करने के योग्य बनकर आओ ताकि इस प्रोग्राम के उपरान्त आपको समभाव-समदृष्टि के बारे में किसी से कुछ भी पूछने की आवश्यकता प्रतीत न हो।

आशय यह है कि आपको मानसिक रूप से स्वस्थ बनकर आना है ताकि आप इस प्रोग्राम के बाद अन्य सजनों को बताने के योग्य बन सको कि जीवनोद्धार हेतु समभाव-समदृष्टि की महत्ता व महत्त्व क्या है और यह भी बताने योग्य बन जाओगे कि जगत में पुनः शान्ति और एकता की व्यवस्था कैसे कायम हो सकती है। वैसे भी उस दिन छुट्टी का दिन है अतः कोई रुकावट भी नहीं है। इससे अगले दिन १६ तारीख को फिर आध्यात्मिक क्रान्ति का प्रोग्राम है। आपके अन्दर संगीतमय वातावरण उत्पन्न हो, आप हर समय प्रसन्नचित्त बने रहो, आपके अन्दर प्रसन्नता का संगीत ध्वनित रहे, कुछ वैसा वातावरण आपको १६ तारीख को मिलने वाला है। अन्य शहरों से आने वालों का स्वागत आप सजनों ने करना है। सजनों इन आयोजित प्रोग्रामों से कोई भी लाभ उठाने से वंचित न रह जाये, ऐसी उन्नति आपने करके दिखानी है और आगे से आगे बढ़ते जाना है। याद रखो क्रान्तिकारियों के कदम तो आगे ही आगे बढ़ते हैं। अतः कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ने का दृढ़-संकल्प लो और परम त्याग दिखाकर सफलता को पाओ।

इस हेतु जिन भौतिक सुखों में उलझे पड़े हो, उनसे ऊपर उठो क्योंकि वह सुख अस्थाई हैं, स्थाई नहीं हैं। उन सुखों में दुःख छिपा हुआ है, इस सत्य को जानो और मानो। परमार्थ के रास्ते पर आगे बढ़ने के लिये उठ खड़े होवो, तैयार हो जाओ। अब हार-जीत तो आपके स्वयं के हाथ में है। हार अपना भयंकर नतीजा आपको बता देगी और जीत आपकी विजय का डण्का बजा देगी। इसी सन्दर्भ में सतवस्तु का कुदरती ग्रन्थ कह रहा है कि नकारात्मक भाव-स्वभाव का जो वातावरण अब चल रहा है, उस वातावरण में रहने से डरो और मुख मोड़कर अन्तर्मुखी हो जाओ व अपने सच्चे घर पहुँच विश्राम को पाओ।

आप ऐसा करने में सफल हो इस हेतु हमारी शुभकामनाएँ आपके साथ हैं।